



पत्र-पुष्प



निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र (09-10-18)

प्राणप्यारे दिलाराम बाप के अति स्नेही, सदा जागती ज्योत बन सबकी ज्योत जगाने वाले, जगमगाते हुए चैतन्य दीपक, बापदादा की सर्व आशाओं को पूर्ण करने वाले आशाओं के दीपक, कुल दीपक निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद के साथ, इनएडवांस दीपावली के पावन पर्व की सबको बहुत-बहुत हार्दिक बधाईयां। यह यादगार त्योहार कितनी यादों को अपने में समाये हुए है। यज्ञ की स्थापना, बापदादा और दादियों के समर्पण का यह प्यारा यादगार दिन है। सभी ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें इसे बड़े उमंग-उत्साह से मनाते हैं। बाबा को तो ज्ञानी तू आत्मा बच्चे प्रिय लगते हैं। जो आत्मायें अज्ञान अन्धकार में भटक रही हैं, दुःख की लहरों में लहरा रही हैं वे हम ज्ञानी तू आत्माओं के सम्पर्क में आकर अज्ञान अंधकार से छूट जाएं, उनका भी दीपक जग जाए। कहते भी हैं ज्ञान सूर्य प्रगटा अज्ञान अन्धेर विनाश...। काम, क्रोध लोभ, मोह आदि विकारों का जो अंधकार है, वह ज्ञान ज्योति प्रज्वलित होने से समाप्त हो जाता है।

आप सब प्रवृत्ति में रहते हुए पवित्रता के बल से कर्मयोगी बनकर चल रहे हो ना! प्यूरिटी में ही रॉयल्टी और रीयल्टी है, पीस है, लव है, हैपीनेस है। दृष्टि वृत्ति स्मृति में सिवाए बाबा और बाबा की बातों के और कोई बात याद नहीं आती है, तो यह भी एक भाग्य है। नई दुनिया में जाना है तो जीवन में नित्य नवीनता लाना है। सुखधाम में जाने लिए यहीं पर तैयारी करनी है। इसके लिए पंछी और परदेशी के समान यहाँ कहीं पर भी अटके लटके चटके नहीं हैं। पवित्रता के बल से जो बाबा का बल मिलता है वो बहुत सुन्दर, बहुत सुखदाई होता है। इस नारायणी नशे में बहुत मजा है। कभी मन को डिस्टर्ब करना, थोड़ा भी गुस्से में आना माना अपना रिकॉर्ड खराब करना। अगर अपने को रिगार्ड देना हो तो रिकॉर्ड में कभी भी नाराजगी के कारण गुस्सा नहीं आना चाहिए। हमें तो यहाँ बहुत मीठा बनना है। मीठा बनना माना अन्दर में कोई द्वेष भाव न हो। इसके लिए बाबा कहते बच्चे कुछ भी हो तुम सदा मुस्कुराना सीख लो। मुस्कुराने से कोई भी बात मुश्किल नहीं लगेगी। जिसके पास सुख, शांति, प्रेम आनंद है वास्तव में वही सच्चिदानंद है। सत् है, व्यर्थ चिंतन से फ्री है, मन वा चित्त में और कोई बात नहीं है तो वह आनंद स्वरूप स्थिति में रहते हैं। भगवान की मेरे ऊपर तो ऐसी दया की दृष्टि है जो मैं समझती हूँ मेरे जैसा सुखी सारा संसार हो जाये। इस संगमयुग की एक घड़ी, आधी घड़ी जितनी भी घड़ियां बची हैं वह सफल होती रहें।

मैंने तो कभी अपनी लाइफ में मन को भटकने की छुट्टी नहीं दी है। मन शान्त है, तन भी शीतल है। ऐसे नहीं कि मुझे यह चाहिए, वह चाहिए... शान्ति में रहने में बहुत कमाई हुई है, बहुत सुख मिला है। बाबा का बनने से तो अतीन्द्रिय सुख मिला है। बोलो, आप सब भी इसका अनुभव करते हो ना! मैं तो अपने आपको बहुत खुशानसीब समझती हूँ जो परमात्मा बाप के काम आ गये। इसके लिए सिर्फ अपने ऊपर अटेन्शन है तो लाइफ में लाइट हैं और परमात्मा से माइट मिल रही है, एवरीथिंग राइट हो रहा है। यह भी ध्यान है कि तन-मन-धन सब सफल होता रहे। मेरा मन सदा सच्चाई और प्रेम से सम्पन्न हो, बुद्धि में योग का बल जमा हो। हाथ में धन है तो सेवा में सफल हो जाए। तो ऐसा ही अटेन्शन रख उड़ती

कला में उड़ते रहना है। देखो, मधुबन वरदान भूमि में तो इस समय डबल विदेशी भाई बहिनों की बहुत सुन्दर रिमझिम है। सभी बाबा के घर में आकर खूब रिफ्रेश हो रहे हैं। अच्छा!

सबको बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,
बी.के. जानकी



ये अव्यक्त इशारे



“समस्या मुक्त समाधान स्वरूप बनो”

1) आप मास्टर मुक्तिदाता बच्चे, जब स्वयं सर्व समस्याओं से मुक्त बनेंगे तब अनेक आत्माओं को मुक्ति दिलाने के निमित्त बन सकेंगे इसलिए बापदादा की आश है कि अब कारण खत्म हो, निवारण ही दिखाई दे। समस्या समाप्त हो जाए, समाधान होता रहे, इसलिए किसी भी कमजोरी की बात में कारण नहीं बताओ, निवारण करो। अब पुरानी भाषा, पुरानी चाल, अलबेलेपन की, कडुवेपन की भाषा परिवर्तन कर समाधान स्वरूप बनो।

2) जितना अनुभवी मूर्त बनते जायेंगे उतना फाउन्डेशन पक्का होगा। फिर किसी भी प्रकार का विघ्न व समस्या खेल के समान अनुभव होगी। कोई भी सीन सामने आती है तो ड्रामा के हिसाब से सब खेल है, यह स्मृति रहे तो एकरस रहेंगे, हलचल नहीं होगी।

3) जैसे लौकिक जीवन में मां बच्चे को पालना द्वारा शक्तिशाली बनाती है, जिससे वह किसी भी समस्या का सामना कर सके। सदा तन्दुरुस्त रहे, सम्पत्तिवान रहे। ऐसे आप श्रेष्ठ आत्मायें जगत मां, बेहद की मां बन, उन्हें ऐसा शक्तिशाली बनाओ जो वे अपने को विघ्न-विनाशक, शक्ति सम्पन्न हेल्दी और वेल्दी अनुभव करें।

4) जैसा समय, जैसी समस्यायें हो, जैसे व्यक्ति हों वैसे स्वयं को मोल्ड कर स्व कल्याण और औरों का कल्याण करने के लिए सदा इज़ी रहो। परिस्थिति प्रमाण अपने नाम का, संस्कारों का, स्थूल साधनों का अगर त्याग भी करना पड़े, तो त्याग करके अपनी श्रेष्ठ स्थिति बना लो। सदा अपनी डबल लाइट स्थिति में रहो तो हर समस्या को सहज पार कर लेंगे।

5) यह युग उड़ती कला का युग है, ब्राह्मणों का कर्तव्य ही उड़ना और उड़ाना है। वास्तविक स्टेज भी उड़ती कला है। उड़ती कला वाला सेकण्ड में सर्व समस्यायें ऐसे पार करेगा जैसे कुछ हुआ ही नहीं। उसे नीचे की कोई भी चीज़ डिस्टर्ब नहीं करेगी, रूकावट नहीं डालेगी।

6) सदा नयनों में, दिल में बाप को समाते हुए एक बाप दूसरा न कोई – इसी लगन में मगन रहो। तो आई हुई परीक्षाओं को, समस्याओं को, व्यर्थ संकल्पों को पानी पर लकीर के समान पार कर पास विथ ऑनर बन जायेंगे। सदा बाप के अटूट लगन में मगन रहते हुए आगे बढ़ते चलो, यह अटूट याद ही सर्व समस्याओं को समाप्त कर उड़ता पंछी बनाए उड़ती कला में ले जायेगी।

7) “मैं मस्तकमणि हूँ”, मस्तक में सदा बाप की याद रहे, इसी को ही ऊंची स्टेज कहा जाता है। इस ऊंची स्टेज पर स्थित रहने वाले नीचे की अनेक प्रकार की बातों को ऐसे पार कर लेंगे जैसे कुछ है ही नहीं। इससे समस्यायें नीचे रह जायेंगी और आप ऊपर हो जायेंगे। सदा सहजयोगी, सहज पुरुषार्थी, सहज प्राप्ति स्वरूप बनो तो हिमालय पर्वत जितनी बड़ी समस्या को भी उड़ती कला के आधार पर सेकण्ड में पार कर लेंगे।

8) “आप और बाप” - इस कम्बाइन्ड रूप का अनुभव करते, सदा शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना, श्रेष्ठ वाणी, श्रेष्ठ दृष्टि, श्रेष्ठ कर्म द्वारा विश्व कल्याणकारी स्वरूप का अनुभव करो तो सेकण्ड में सर्व समस्याओं का समाधान कर सकेंगे। सदा एक स्लोगान याद रखना - “न समस्या बनेंगे न समस्या को देख डगमग होंगे, स्वयं भी समाधान स्वरूप रहेंगे और दूसरों को भी समाधान देंगे।” यह स्मृति सफलता स्वरूप बना देगी।

9) जो विजयी रत्न हैं वह किसी भी कार्य से, समस्या से, व्यक्ति से किनारा नहीं करेंगे। लेकिन सब कर्म करते हुए, सामना करते हुए, सहयोगी बनते हुए बेहद के वैरागवृत्ति में रहेंगे। दूसरे को उल्हना नहीं देंगे। समस्या के समय स्व राज्य अधिकारीपन की सीट पर रह समाधान स्वरूप बनेंगे।

10) हर घड़ी विश्व कल्याण प्रति समर्पित करो। जब हर संकल्प, हर सेकेण्ड सेवा में बिजी रहेंगे, फुर्सत नहीं होगी, तो माया को भी आपके पास आने की फुर्सत नहीं होगी। समस्यायें समाधान के रूप में परिवर्तित हो जायेंगी। समाधान स्वरूप श्रेष्ठ आत्माओं के पास समस्या आने की हिम्मत नहीं रख सकती।

11) मन्सा-वाचा-कर्मणा निरन्तर दान दो, वरदान दो तो स्व का ग्रहण स्वतः ही समाप्त हो जायेगा, अविनाशी लंगर लगाओ। मूल संस्कार जो भिन्न-भिन्न रूप में समस्या बनकर आते हैं। उन्हें समाप्त करने के लिए अब शक्तिशाली संस्कार दाता, विधाता, वरदाता के इमर्ज करो। यह महासंस्कार कमजोर संस्कार को स्वतः समाप्त कर देंगे। आप औरों को रास्ता दिखाने के, बाप का खजाना देने के निमित्त सहारा बनो तो कमजोरियों का किनारा स्वतः हो जायेगा।

12) जैसे स्नेह में सभी पास मार्क्स लेने वाले हो, ऐसे अब समाधान स्वरूप की माला तैयार करो। सम्पूर्ण बनना अर्थात् समाधान स्वरूप बनना। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा समस्या ले आने वाला भी समस्या भूल जाता था। सम्पूर्ण स्थिति के आगे

समस्यायें बचपन का खेल अनुभव होती हैं। तो फालो फादर कर अपनी सम्पूर्ण स्थिति में स्थित रहो।

13) मास्टर सर्वशक्तिवान के आगे कोई भी समस्या आ नहीं सकती। जैसे हाथी के पांव के नीचे अगर चींटी आ जाए तो दिखाई देगी क्या? तो यह समस्यायें भी आप महारथियों के आगे चींटी समान हैं, इन्हें खेल और खिलौना समझो तो खुशी में रहेंगे, कितनी भी बड़ी बात छोटी हो जायेगी।

14) कोई भी खिटखिट का कारण होता है - तू मैं, मेरा तेरा..। लेकिन बाप को सामने रखकर दिल से "मेरा बाबा" कहो तो कोई भी खिटखिट वा समस्या सहज समाप्त हो जायेगी। सदा निर्विघ्न बन तीव्र पुरुषार्थ से उड़ती-कला का अनुभव करते रहो तो बहुतकाल की निर्विघ्न स्थिति, मजबूत स्थिति सब मजबूरियों को सहज समाप्त कर देगी।

15) समस्याओं का काम है आना, निश्चयबुद्धि आत्मा का काम है समाधान स्वरूप से समस्या को परिवर्तन करना। क्यों? आप हर ब्राह्मण आत्मा ने ब्राह्मण जन्म लेते ही माया को चैलेन्ज किया है कि हम मायाजीत बनने वाले हैं। तो समस्या का स्वरूप माया का स्वरूप है। जब चैलेन्ज किया है तो माया सामना तो करेगी लेकिन आप उसे निश्चयबुद्धि विजयी स्वरूप से, नथिंगन्यु समझकर पार कर लो तो बेफिकर बादशाह रहेंगे।

16) कभी व्यर्थ संकल्पों के हैमर से समस्या के पत्थर को तोड़ने में नहीं लगना। अब यह मजदूरी करना छोड़ो, बेगमपुर के बादशाह बनो। तो न समस्या का शब्द होगा, न बार-बार समाधान करने में समय जायेगा। यही संस्कार पुराने आपके दास बन जायेंगे, वार नहीं करेंगे। तो बादशाह बनो, तख्तनशीन बनो, ताजधारी बनो, तिलकधारी बनो।

शिवबाबा याद है ?

ओम् शान्ति

31-10-14

मधुबन

“अब ऐसा कोई प्रोग्राम बनाओ जो हमारा बाबा कौन है, कैसा है, उसका सबको साक्षात्कार हो जाये” (दादी जानकी)

अब लगता है कि लम्बा कुछ सुनाने की जरूरत नहीं है इसलिए न कुछ बोलूँ तो भी अच्छा है और बोलूँ तो ऐसा बोलूँ जो भूले नहीं। हमको जीना है तो ऐसा, फिर इसी स्थिति में मरना है। जब तक मरूँ ना तो ऐसी स्थिति हो। इसके लिए हर एक बाबा के अनन्य बन जायें, उन जैसा अन्य कोई नहीं। तो मेरी भावना है, आप हर एक बाबा का परिचय मुख से भले नहीं दो। किसी को भी कोई प्रकार का दुःख हो ना, तो आपको देखकर चला जावे। दुःख करने की क्या बात है? ऐसे नहीं बोलो। तो जहाँ भी जायेंगी, जहाँ भी रहेंगी... मुझे कोई घर नहीं है, मेरा कोई स्टूडेंट नहीं है इसलिए बाबा ने मुझे अपने दिल में जगह दिया है, वहीं रहती हूँ। अब अन्त मते सो गते बाबा के दिल में ही बैठे रहें। जब तक बाबा ने इस देह में रखा है, बाबा ने दिल में बिठाया है। मैंने बाबा को दिल में बिठाया है, बाबा ने मेरे को दिल में बिठाया है।

आजकल मैं रूमाल भी नहीं रख पाती हूँ, क्योंकि सम्भालना पड़ेगा इसलिए बहुत सिम्पल बनके ऐसा सैम्पुल बनें जहाँ भी जायें, जहाँ भी रहे तो कोई प्रॉब्लम नहीं है। जो वरी करता है वो हरी करता है, वो करी बनता है इसलिए न वरी, न हरी.. किसकी वरी? क्या चाहिए? न हरी... जल्दी की कोई बात नहीं है।

बाबा की कमाल है जो ऐसा संगठन बनाया है, संगठन

को देख कितनी खुशी होती है। आप सबको देख दिल खुश हो गई। तो सभी को मैं यह गिफ्ट देना चाहती हूँ, जिस गिफ्ट की लिफ्ट में बैठो और पहुँच जाओ। आजकल सीढ़ी चढ़ने में थोड़ा टाइम भी लगता है। हमारे सामने तो लिफ्ट खड़ी है सिर्फ बटन दबाओ पहुँच जाओ। इज़ी है ना क्योंकि समय बहुत थोड़ा है, कइयों को इसमें भी संशय होता है क्योंकि इतना साल हो गया, अभी तक विनाश आया नहीं है। हम कहती हैं अच्छा है विनाश नहीं आया है जब तक हम फरिश्ता नहीं बने हैं। हम फरिश्ता रूप बनेंगे तो विनाश इतने में हो जायेगा। साइंस वाले बड़ा अच्छा काम कर रहे हैं, इसी के आधार से सारे विश्व को मैसेज मिल रहा है। बाकी यह कोई हमारी लाइफ के लिए नहीं है, सेवा के लिए है। साइलेंस वाले भी फरिश्ता बनने का काम तीव्रता से करें।

तो ऐसे मिलन मनाने में पहले खुशी मेरे को है या आपको है? क्योंकि खुशी जैसी खुराक नहीं, चिंता जैसा मर्ज नहीं। खुशी मजबूत बनाती है। काम बाबा का है तो बाबा ही चिंता करे ना, मेरा काम है खुश रहना, यह एक ही काम है और आपको खुशी देना, जो खुशी मुझे बाबा देता है। वन्दरफुल है यह भी नुमाशाम के समय योग करना, अमृतवेले तो ऐसे नहीं बैठ सकते हैं ना। दिल कहता है पर फिर यहाँ ही बैठके करती हूँ। तबियत के कारण कभी मिस भी होता तो आप सबसे माफी

मांगती हूँ। मैं राय देती हूँ कभी भी कोई अमृतवेला मिस नहीं करे। अमृतवेले की महिमा बहुत है, इतना ही फिर नुमाशाम के योग की भी है। जो यह नियम अनुसार चलते हैं जैसे ज्ञान, योग, धारणा, सेवा चार सब्जेक्ट नम्बरवार हैं।

ज्ञान कहता है देह और सम्बन्ध से न्यारे रह बाबा की याद में नेचुरल लाइफ हो। योग भी नेचुरल हो। धारणा ऐसी हो, जो बहुत मीठा हो जैसे बाबा हमेशा मुरली चलाने के पहले मीठे बच्चे कहता है। मीठे कौन होते हैं? जो कभी भी किसी के स्वभाव वश नहीं होते हैं। आज मैं यह आप लोगों को हाथ जोड़के कहती हूँ किसी के स्वभाव के वश होना माना बाबा जैसे मीठे बच्चे कहते हैं उनसे वंचित हो जाना है। तो हर एक अभी से संकल्प करे मीठा बनने का। तो ज्ञान योग धारणा में मुस्कराते रहो। वह सेवा दुआयें देने वाली है। बाबा का प्यार और परिवार की दुआयें मिलती हैं। बाबा देखता है बच्ची मीठी

है, मेरा बच्चा मेरा नाम बाला करने के लिए अपनी घोट तो नशा चढ़े, जो बाबा सुनाता है वही मंथन करें। जितना वो मंथन करेंगे तो औरों को ऐसा बनने में इज़ी होगा। मुख से कुछ न बोलो। अभी ऐसा कोई प्रोग्राम बनाओ जो सारी दुनिया को बाबा कौन है, कैसा है, साक्षात्कार हो जाये। विचार करना आपस में। मतलब ऐसा प्रोग्राम बनाओ जो सबके दिल से निकलें मेरा बाबा, जो सर्व आत्माओं का पिता है। कलियुग को खत्म करके सतयुग लाने वाला बाबा आया है, ऐसा मेरा बाबा है।

सारा दिन मुरली पढ़ो सुनो, उसी पर चिंतन करो तो मुरली से जिसका जितना प्यार है। मुरली, मधुबन में भगवान सुनाता है। जो बाबा ने मुरली में बात सुनाई वो अमल में लाई? नहीं हुई हो तो आज से अभी से नज़रें ऐसी रखो। अच्छा।

दूसरा क्लास

“कभी किसी से झरमुई झगमुई न करना ही अपने ऊपर कृपा करना है”

यह अच्छा नहीं है... यह ख्याल आना माना की हुई कमाई खलास कर देना। मैं कहती हूँ जो करना है अब कर लें, जो किया है अच्छा किया है, बाकी और अच्छा क्या करना है! साइलेन्स में बैठे देख रही थी कि अभी हमें और क्या करना है। दुआ, दया, कृपा, आशीर्वाद इन चारों में बहुत अच्छे अनुभवी हैं। सारी लाइफ कभी किसी से झरमुई झगमुई नहीं की है, यह भगवान की बड़ी कृपा रही है। मैं कभी इन बातों में अपने को टायर्ड नहीं होने दिया है क्योंकि झरमुई झरमुई करने से विकर्म विनाश तो नहीं होंगे पर और ही विकर्मों का खाता बढ़ जायेगा इसलिए खबरदार, होशियार, सावधान रहना। तो अन्दर से मेरी भावना है कि अटेन्शन रखो, टेन्शन नहीं रखो। टेन्शन फ्री। मैं तो टेन्शन नहीं कर सकती हूँ।

यह शरीर भले कितना भी तमाशा दिखाता है, शरीर समझता है इसको जितना सहन करना हो करे, मैं छोड़ूँगी नहीं। परन्तु आप लोगों के निमित्त इस टाइम मुझे कुछ नहीं है, पूरे दिन भर में कैसे रहती हूँ, कैसे बिताती हूँ फिर भी यह टाइम आपसे मिलाता है। और आप खींचके आ जाते हो तो यह कमरा बहुत अच्छा है। ऐसा कमरा पूरे शान्तिवन में कहीं नहीं मिलेगा। हॉस्पिटल जैसी खटिया होते भी सहनशक्ति चाहिए इस पर सोने की। यहाँ बैठने में सब दर्द भूल गया, है नहीं कुछ। तो यह

बाबा फिर मुझे कहता है मैं सर्वशक्तिवान हूँ, तू मेरी बेटी हो ना, मास्टर सर्वशक्तिवान हो ना, तो फिर क्यों कहती हो मैं सहन नहीं कर सकती हूँ। अष्ट शक्तियों में से भी सहनशक्ति, समाने की, समेटने की यह तीन शक्तियां बहुत काम कर रही हैं। इन तीन शक्तियों के पीछे बाकी रही पाँच शक्तियां भी ऑटोमेटिक काम करती हैं। परन्तु मा. सर्वशक्तिवान हूँ, याद में ऐसी स्थिति होवे।

अन्तर्मुखी जो होगा वो सदैव सुखी होगा, अन्तर्मुखता से एकाग्रता अच्छी होती है, एकान्त अच्छी लगती है। एकान्त में बाबा से मिलना, बाबा से बातें करना बहुत अच्छा लगता है। बाबा कहता है जो बाबा के गुण हैं वो तुम्हारी सूरत से दिखाई देवें। किसी ने लिखा है कि हमको अपने लाइफ का कदर होगा तो बाबा खुश होगा क्योंकि जैसा कर्म मैं करूँगा मुझे देख और करेंगे। सारी विश्व की सेवायें बाबा ने कैसे की, कराई हैं। सफल करना और सफल कराना यह सब्जेक्ट बड़ी अच्छी है। मेरे पास यह तन भी ऐसा है, मुझे नाटक दिखाता है फिर भी मैं अटकती नहीं हूँ।

तो अभी कोई रूखे नहीं, मीठे बनो, प्यारे बनो तो भगवान खुश हो। तुम भी खुश हम भी खुश। जी खुश तो जहान खुश। ओके।

“प्रेक्टिकल लाइफ में ऐसी अच्छी-अच्छी बातें हो जो हिम्मत, विश्वास, उमंग-उत्साह से अचल अडोल स्थिति बन जाये, न चलायमान हों, न डोलायमान हों”

ओम् शान्ति कहने में यह अंगुली बहुत काम करती है, यह जो चार और अंगुलियां हैं ना, छोटी है चाहे मोटी है पर सब काम की हैं। इतनी बड़ी सभा देख खींच होती है, रचता बाबा की रचना को देख, इतनी सुन्दर रचना बैठी है। सब आत्मायें हैं, सभी देहभान को छोड़ देह से न्यारे रहने के अनुभवी हैं। यहाँ सिर्फ अपने श्वास, संकल्प और समय को सफल करने का काम करना है। वैसे बात करते तो श्वास चढ़ता है पर यहाँ बैठे श्वास, संकल्प, समय सब बहुत अच्छा सफल होता है।

आत्मा शान्त है तो कोई संकल्प नहीं है, तो जैसे बाबा सत् है, चैतन्य है तो हम बच्चों को भी शान्ति और सच्चाई के आधार से ऐसा आनंद स्वरूप बनाता है। कोई भी इधर उधर की बात यह कान न सुनने के लिये हैं, न सुनाने के लिये हैं। सच्चाई और प्रेम के सिवाए अन्दर में और कुछ है ही नहीं। एक मिनट अच्छा मुस्कुराओ सभी, बाबा देखेगा और कहेगा बच्चे खुशी में इतना अच्छा मुस्कुरा रहे हैं तो कोई मुश्किलातें नहीं हैं, फ्री हैं। एक दो को देख, किसका भी कोई स्वभाव नहीं सब मेरे बाबा के बच्चे भाई भाई हैं। तो भाई भाई की दृष्टि एकदम आत्म-अभिमानि बनाती है। अभी सेवा में बहन भाई हैं, बहन भाई कितने मीठे हैं। ऐसी सभा जो यहाँ लगती है शान्तिवन में, सारे कल्प में कभी ऐसी सभा नहीं होगी। ऐसा हॉल, ऐसा स्थान सारे विश्व में कहीं नहीं होगा। ड्रामा अनुसार सारा विश्व देखने को मिला है। वन्दर तो यह है सफेद बालों में और ही सुन्दर लगते हैं क्योंकि बाबा का बनने से सुख मिला है इलाही। बाबा को भी हमको देख, दिनप्रति-दिन वृद्धि देख कितनी खुशी होती है। पहले तो थोड़े थे, अभी बाबा के बच्चे लाखों हो गये हैं, वन्दर है।

जैसा संग वैसा रंग कमाल है उसकी। मुझे दिल होती है मैं भण्डारे में जाऊं, कितना अच्छा भोजन सभी को मिल रहा है। जैसा अन्न वैसा मन सभी को यह फायदा हुआ है। इन दो बातों से समानता में आ गये हैं, बाबा सभी को ब्रह्माभोजन मुख में खिलाता है। बाबा ने एक बारी हाथ में ऐसे ग्राही (भोजन की) लेके कहा था बच्ची पहले तेरे को खिलाऊं या बाबा को खिलाऊं! मैंने कहा मैं बाबा को खिलाती हूँ, आप मेरे को खिलाओ। कितनी सुन्दर सीन होगी वो। बाबा ने अपने साथ भोजन पर बिठाया, ग्राही हाथ में है, मैंने भी ग्राही बनाई, मैंने कहा मैं पहले बाबा को खिलाती हूँ फिर बाबा ने मेरे को खिलाया। तो कितना सुख मिला है, कितना प्यार

मिला है।

मुख से क्या बोलना है वो बाबा मुरली में सिखाता है इसलिए और कुछ बोलना आता ही नहीं है। बाबा कैसा टीचर है! जैसा है बाप, फिर माँ और बाप दोनों रूपों से तुम मात-पिता हम बालक तेरे, तुम्हारी कृपा से सुख घनेरे, कोई न जाने तुम्हारा अन्त, ऊंचे ते ऊंचा भगवंत... यह भक्ति में हम गीत गाते थे। जिसका अन्त कोई नहीं जानता, कौन है कैसा है वो अन्तर बताया है। हमको पता है वो कौन है? वो स्मृति में रहने की दृष्टि ऐसी देता है जो हमारी वृत्ति में उसकी स्मृति है। उनकी स्मृति अडोल अचल बनाती है। कोई छोटी-मोटी बात में हिलना हम नहीं जानते। बातें आई सो गई, सोचने की जरूरत नहीं है। बीती को चितवो नहीं, आगे की रखो न आश... यह ऐसे ऐसे शब्द जो हैं ना। याद रखो तो कितनी मदद मिलती है। हिम्मते बच्चे मदद दे बाप, सच्ची दिल पर साहेब राजी। ऐसी अच्छी-अच्छी बातें प्रैक्टिकल लाइफ में हों तो हिम्मत, विश्वास, उमंग-उत्साह, अचल अडोल स्थिति, न चलायमान न डोलायमान बन जायेंगे। तो ऐसी मीठी-मीठी बातें अपनी अवस्था को अच्छा बनाने के लिए बाबा बहुत अच्छा सुनाता है।

मेरे को तरस तब पड़ता है जब कोई पुरानी या पराई बात भूलते नहीं हैं, बड़ा तरस पड़ता है। अरे, इसे छोड़ो ना। जो अवस्था अभी बनेगी अन्त मते सो गति वो होगी। औरों के लिए भी बाबा ने कहा है प्रेरणा देने लायक अवस्था बने। ऐसी अचल अडोल स्थिति हो जो किसी को ऐसा बनने के लिए खींच हो, प्रेरणा आये।

हमने अपने कमरे में पूर्वजों का फोटो रखा है। पूर्वज वो जो सबका स्नेही व शुभचिंतक हो। पूर्वजों का कैसा आपस में प्यार था, सदा ही एक दो को देख कितने खुश होते थे। बाबा तो भागीरथ है, हम फिर पदमापदम भाग्यशाली हैं, जहाँ कदम रखें वहाँ बाबा की याद में रहें और औरों को भी याद आ जाये। तो श्वास, संकल्प, समय सब सफल हों। जैसे मन बुद्धि संस्कार आत्मा में है। आत्मा इतनी छोटी और ज्ञान इतना बड़ा आत्मा में भर जावे। फिर मन शान्त है, बुद्धि में इतना बड़ा ज्ञान समा गया वो संस्कारों में चला गया, जो कल्प-कल्प वही संस्कार चलते रहेंगे। कल्प पहले भी यह बने थे, अभी ऑटोमेटिक वो संस्कार बाबा की नॉलेज से बनते जा रहे हैं। पढ़ाई में टीचर याद जरूर

आता है कि किसने पढ़ाया है और क्या पढ़ाया है? कैसे पालना दी है? वन्दर है। जो हर आत्मा में, कोई भी भाषा वाला है, कोई भी धर्म वाला है, पहचान आ जाती है। भूल जाता है मैं कौन-से धर्म की हूँ, कौन-से देश की हूँ क्योंकि वास्तव में हम सभी का देश परमधाम है, जो बाप का घर है सो मेरा घर है। वन्दर है ना, याद है ना हमारा घर कौन-सा है? अब घर जाना है। जब कोई शरीर छोड़ता है तो यह गीत बजाते शमशान तक ले जाते हैं। हमारी बुद्धि में भी है कि अब घर जाना है। कौन-सा घर है? जो बाप का घर है वो मेरा घर है। ऐसे बाबा को घर में याद करो, कौन-सा घर है? याद करो कहाँ है परमधाम? निमित्त यहाँ शरीर में हैं फिर तो सबको घर जाना है। हमको तो बाबा के साथ घर

जाना है फिर सुखधाम में आना है, औरों को दुःखधाम से छुड़ाना है। इस दुनिया में बिचारे जो दुःखी हैं, तरस पड़ता है, अभी उनको भी पता पड़े यह घर जा रहे हैं। तो हमको घर जाना है, सबको बताना है। अभी घर जाने का टाइम है इसलिए कर्म अकर्म विकर्म की गति जो बाबा ने समझाई है, ऐसे बाबा को याद करना नहीं पड़ता है, याद स्वतः आता है। घर जाने के पहले सुख-शान्ति सम्पन्न बनना है। 16 कला सम्पूर्ण बनना है। तो यह सारा प्लान प्रैक्टिकल जो कल्प पहले हुआ है वही बाबा बता रहा है। नई बात नहीं है, कल्प पहले भी हुआ है। ओके, ओम् शान्ति।

“पुरुषार्थ में सदा एलर्ट और एवररेडी रहो तो अन्त मति सो गति अच्छी होगी”

(गुल्जार दादी जी)

देखो, बाबा का हम बच्चों से कितना प्यार है। बच्चों की जरा भी कमी देख नहीं सकता है। जिससे भी प्यार होता है, उसकी छोटी-भी कोई ऐसी वैसी बात सुनेंगे तो बुरा लगेगा। आपकी नहीं है, है दूसरे की लेकिन ऐसी बुरी लगेगी, जैसे मेरी है। तो बाबा का तो आत्मिक प्यार है, परमात्म प्यार है। तो बाबा ने यह विशेष प्रोग्राम बनाया कि जो भी कमजोरियाँ हैं, कमियाँ हैं... क्योंकि यह अन्तिम काल है और सबका अन्तिम काल आना ही है। फिक्स नहीं है, कभी भी किसी के पास आ सकता है। मम्मा का बहुत अच्छा एक स्लोगन था - “हर घड़ी अन्तिम घड़ी समझो।” तो अन्तिम घड़ी में और कुछ याद नहीं आवे, कोई देवता याद आवे, अच्छी बातें याद आवें क्योंकि अन्त मति सो गति होती है ना। एवररेडी रहेंगे तो अन्त सुहानी होगी।

बाबा की ऐसी एलर्ट रहने की नेचर थी तो बच्चों को भी एलर्ट रखता था। तो हमें भी अभी ऐसा एलर्ट रहना चाहिए क्योंकि बाबा को बिल्कुल सुस्ती अच्छी नहीं लगती थी। कैसा भी पेपर आवे, उसमें हम पास होकर दिखावें। करेंगे, देखेंगे... यह शब्द बाबा को बिल्कुल अच्छे नहीं लगते हैं। लेकिन अगर बाबा से प्यार है, वो तो सबका 100 परसेन्ट है, उसके लिए तो बाबा ने हमें सर्टीफिकेट दिया। बाकी और कोई सबजेक्ट में ऐसी रिजल्ट नहीं है। बाबा से प्यार है तब तो मजबूरी से ही सही, चल रहे हैं। परन्तु प्यार का रिटर्न केवल इतना ही नहीं होगा। बाकी जो सबजेक्ट रहे हुए हैं, उसमें भी समान तो बनना पड़ेगा ना।

बाबा कहते मुझे और कोई रिटर्न नहीं चाहिए, एक शब्द में तुम अपने को टर्न कर लो। टर्न और रिटर्न। इसमें फायदा तो

हमको ही होगा, तब बाबा कहते अपने को टर्न करो, इसमें दूसरे को नहीं देखना होता है क्योंकि अपने को बचाने के लिए, अपनी गलती दूसरे के ऊपर रखेंगे। दूसरे को देखके करने से दूर की नज़र तेज हो जाती है। फिर दूसरे की गलती सहज दिखाई देती है तो कहते हैं ये तो यह भी करते हैं इसलिए सब चलता है, होता है। अब चलेगा तो सही क्योंकि सब नम्बरवार हैं लेकिन मेरे को क्या देखना है? तो जो दूसरों को ज्यादा देखते हैं, उन्हीं के आधार पर जो अपनी गलती भी उनके ऊपर छोड़ने की कोशिश करते हैं, वो आलसी और अलबेले हो जाते हैं। “मैंने किया” अन्दर समझ रहे हैं लेकिन बाहर से सिद्ध जो करेंगे वो यह कहेंगे यह हुआ ना, यह किया ना... इसलिए हुआ। यही तो पेपर है ना, हमारे सामने छोटी-छोटी बातों के माध्यम से पेपर आते हैं। जहाँ भी जायेंगे, वहाँ यह पेपर आयेंगे जरूर, कोई-न-कोई रूप चेंज होकर। इसलिए खुद को बदलो, बदलके औरों को बदलो, इसके लिए बदलना है ज्ञान और योग के हिसाब से न कि सेन्टर के हिसाब से या साथी के हिसाब से। तो यह थोड़ी हिम्मत रखो। थोड़ी-सी बात हुई तो क्या करें, कैसे करें... वेस्ट थॉट शुरू होते हैं।

बाबा ने कहा किसकी फालतू बातें गन्दी बातें सुनना यह भी वास्तव में पाप है क्योंकि हमने अपना टाइम तो वेस्ट किया। सुनने से कुछ न कुछ बात याद आती है इसलिए बाबा कहते युक्ति से अपने को टालने की कोशिश करो। अभी यह सब बातें भूलके सेकण्ड में अशरीरी हो जाने की प्रैक्टिस करो। मन ने माना, कन्ट्रोल हुए संकल्प? अपने को आत्मा समझके बाबा के मिलन

में खो जाने का अभ्यास और अनुभव हुआ? इसके लिए कन्ट्रोलिंग पॉवर बहुत चाहिए तभी पास विथ ऑनर बनेंगे। केवल आप 33 मार्क्स से खुश नहीं होना। इसके लिए यह अभ्यास बिल्कुल नहीं छोड़ना है। मैं आत्मा परमधाम में ज्योति बिन्दू... बस इसी में खो जाने का अभ्यास यहाँ बहुत करो। इसी से आप में कन्ट्रोलिंग पॉवर आयेगी, तो फिर यह जो भाव-स्वभाव, व्यर्थ संकल्प हैं वो सब खत्म हो जायेंगे। अभी खास स्व-परिवर्तन के लिए भट्टी के नाम से जो शुभ अवसर मिला है, उसका पूरा लाभ उठाओ।

सेन्टर पर हमेशा किसी से भी जब मिलते हो तो दिल से खुश होके मुस्कराके मीठे बोल बोलते हुए मिलो तब सेन्टर को ताकत आयेगी। इसलिए इसमें दृढ़ रहो तो यही गिफ्ट सफलता दिलाने का काम करेगी। इस दृढ़ता रूपी चाबी को आप सम्भालके रखना क्योंकि माया इसी को चोरी करती है। इस चाबी को अपनी बुद्धि में माया से छूपाके रख देना और जब भी काम पड़े तो उस दृढ़ता रूपी चाबी को यूज करना यानि गँवा नहीं देना। आप यह दृढ़ संकल्प करो कि हमें नम्बरवन जाना ही है क्योंकि सब रस करेंगे और आप रह जायेंगी तो अच्छा नहीं है। सभी यही संकल्प करके गये हैं, क्योंकि बाबा को दूसरा नम्बर अच्छा नहीं लगता है। बाबा खुद एक नम्बर है ना, तो बाबा को एक नम्बर ही अच्छा लगता है। इसलिए अगर आप सबका एक ही विचार है तो ताली बजाओ, मैं बाबा को कहूँगी बाबा, यह भी नम्बरवन ग्रुप होके ही

दिखायेगा। ठीक है, ओ.के. कहना माना बाप और किंगडम को याद करना। इसमें और कुछ कथा नहीं करना अर्थात् इसमें बाबा से और कुछ बातें नहीं करना, न ही कोई बहाना देना लेकिन रोज ओ.के. कहने से सारा दिन आपका ओ.के. होगा क्योंकि अमृतवेले बाबा कहते आँख खोलते जो चीज़ देखी जाती है, जो कोई अच्छा मिलता है तो सारा दिन अच्छा बीतता है और सुबह-सुबह ऐसा वैसा देख लिया, तो कहते हैं पता नहीं किसकी शक्ल देखी, सारा दिन मेरा खराब गया। आप तो पहले-पहले उठते ही किसको देखती हो? बाबा को। और बाबा को ओ.के. करते रहना। ठीक है! बाबा तो हमको बतायेगा रिजल्ट कि ओ.के. किया या सो गये या झुटका खाया, यह तो रिपोर्ट आयेगी ना। तो प्यार से परिवर्तन करना ही है, अभी इसमें टाइम क्यों लगायें? करना ही है, यह पाठ यहाँ पक्का करके जाओ। होना ही है, करना ही है। अच्छा!

अभी चलो बाबा के पास जाके बैठते हैं। मैं आत्मा ज्योतिबिन्दू, बाबा भी परमधाम में परम आत्मा ज्योतिबिन्दू... बस, परमधाम में जाके बाबा के साथ बैठ गये... तो कितना मजा आयेगा! वहाँ देखो स्टेज पर आने के लिए कितना माथा मारते हैं, बाबा की दृष्टि लेने के लिए, यह तो बाबा के साथ जाके बैठेंगी ना। अभी सारा टाइम परमधाम में बैठो या नशे में रहो मैं कौन-सी आत्मा हूँ, इन दोनों स्मृतियों में रहना। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन

अपना बैलेन्स सीट ऐसा क्लीयर करो जो धर्मराज भी सलाम करके वतन में भजे

यह संगमयुग पुरुषोत्तम युग है इसे चढ़ती कला का, वरदानी युग भी कहते हैं। इस युग में आप सबको समर्पित होने का भाग्य मिला है। यह भाग्य भी कोटो में कोई, कोई में भी कोई को मिलता है। तो हमें आप समर्पित पाण्डवों को देख बहुत-बहुत खुशी हो रही है। हमारे दिल की आश है कि आप सब ऐसी भट्टी करो जो बाबा की आशायें पूरी हों। हम सबकी एक आश है कि हम बाबा को प्रत्यक्ष करें, यह आश अभी तक पूरी नहीं हो रही है, क्यों? हमारी आश है कि हमारे यज्ञ के जो सभी पाण्डव हैं, वह ऐसा करके दिखावें जो हरेक कहे कि मेरी स्थिति बाबा के ज्ञान और योग के अनुसार निर्विघ्न है अर्थात् हम बाबा आपके पक्के 'मायाजीत बच्चे' हैं। माया कमजोर करती है वह तो बहुत सुना है। लेकिन अभी हम मायाजीत हैं, ऐसा ठप्पा सभी का लगना चाहिए। ऐसी यहाँ भट्टी की प्रतिज्ञा का प्रत्यक्ष प्रमाण बाबा को मिलना चाहिए। पाण्डव माना ही जिन्होंने प्रीत बुद्धि का प्रत्यक्षफल

दिखाया। भल उनके सामने कितनी भी परीक्षायें आई, जंगल में भी जाना पड़ा तो भी विजयी बनकर दिखाया। ऐसे आप पाण्डव इस पाँच दिन के अन्दर ऐसी एकता की नींव लगाकर जाओ जो आप यहाँ से जहाँ भी जाओ तो सब देखकर कहें कि यह जादू की नगरी से पूरा ही बदलकर आये हैं। जो कुछ भी छोटी-मोटी, तेरी-मेरी बातें हों... सब खत्म करके हम बाबा के सच्चे बच्चे, सच्ची गोदी में बैठकर चलेंगे - ऐसी यहाँ भट्टी करके जाना। योग का अभ्यास तो करना ही है, साथ-साथ इस भट्टी में कुछ नवीनता करके जाना है।

जैसे बाबा कहते हैं कि सर्वश त्यागी बनो, वैरागी बनो। समर्पित का अर्थ ही है सर्वश त्यागी। समर्पित माना ही पुरानी दुनिया से वैरागी और पक्के सन्यासी, पक्के त्यागी, पक्के तपस्वी और सच्चे-सच्चे माला के मणके बनकर जायें। हम 'विजयी माला' के विजयी रत्न हैं, विजयी रत्न थे इसलिए अभी 'विजयी रत्न'

बनके ही जाना है क्योंकि बार-बार दिल में यह जरूर आता कि अब घर जाना है या आप समझते हैं हम तो अभी युवा हैं, हमें तो अभी इस दुनिया में रहना है? युवा, बूढ़े सब समझते हैं हमें घर जाना है। कभी-कभी युवा समझते हैं हम तो अभी युवा हैं लेकिन बाबा कहते आप सब वानप्रस्थी हो, वानप्रस्थी माना युवा नहीं। वानप्रस्थियों की बुद्धि में रहता है कि कभी भी पंछी उड़ जाए, हम तैयार हैं।

तो हमारी आश है कि एक-एक पाण्डव ऐसा अपना बैलेन्स सीट क्लीयर करे – जो धर्मराज भी फूलों से स्वागत करके, सलाम करके वतन में भेजे। सभी बाबा के ज्ञानी तू आत्मा बच्चे

अपना बैलेन्स सीट ऐसा बनाओ जो धर्मराज दिल से खातिरी करे। यह नहीं कि देख तुमने यह गलती किया, यह तू भोग - तो यह सब यहाँ खत्म करके जाओ। क्या यह पॉसिबुल है? हमारा रिमार्क है कि अन्त में बाबा बांहे पसार कर कहे आओ बच्चे आओ, ऐसे गले लगाकर वतन में भेज दे, ऐसी स्थिति बनानी है। दिल कहे 100 प्रतिशत हमारा यह रिकार्ड हो। बाबा की श्रीमत अनुसार हमारा मन-वचन-कर्म हो। बाबा हमें सर्टीफिकेट दे कि यह संस्कारों से, संकल्पों से, दृष्टि, वृत्ति सभी से पास विद ऑनर है। ऐसी कमाल करो तब कहेंगे समर्पित। ऐसी कमाल नहीं किया तो समर्पित क्या हुआ! अच्छा - ओम् शान्ति।

वरिष्ठ भाईयों की भट्टी में चली हुई वर्कशाप (कार्यशाला) टॉपिक - जोश, रोब, मैं पन के संस्कारों का संस्कार

- जब हम अपने को ईश्वरीय सेवाधारी समझेंगे तब इन संस्कारों का संस्कार होगा।
- मैं आत्मा शांत स्वरूप हूँ इसका नित्य अभ्यास करें।
- निमित्त भाव से निर्माण बनें।
- देही अभिमानी पन का अभ्यास करें।
- निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी स्वरूप।
- सेवाओं का अभिमान ना हो।
- दूसरों को रिगार्ड देते चलें।
- भाई-भाई की स्मृति से कार्य व्यवहार में आयें।
- कोई भी कार्य करने से पहले सोच समझकर करें।
- स्वयं की चैकिंग हो। रियलाइजेशन के साथ पूरा अटेंशन हो।
- सदा स्मृति में रहे कि हर एक का पार्ट ड्रामा में अलग-अलग है।
- अपमान की फीलिंग से रोब आता है इसलिए स्वमान में रहने का अभ्यास करें।
- अपनी विशेषताओं को परमात्म प्रसाद समझेंगे जो जोश-रोब खत्म हो जायेगा।
- हमें किसी भी हालत में डिस्टर्ब नहीं होना है।
- आत्मिक स्वरूप की स्थिति में रहें।
- क्षमा भाव का संस्कार हो तो रोब खत्म होगा।
- छोटों को प्यार, बड़ों को रिगार्ड देने से रोब खत्म होगा।
- शीतलता का देव या देवी हूँ, इस स्वरूप की स्मृति रहे।
- रहम दिल स्वरूप बनें।
- हर कर्म करने से पहले यह सोचें कि क्या मेरे यह कर्म बाप समान हैं।
- सदा करावनहार की स्मृति रहे।
- गुणग्राही दृष्टि हो।
- यह मेरा भाग्य है कि मुझ आत्मा को ईश्वरीय सेवा का चांस मिला है, इससे रोब नहीं आयेगा।
- निमित्त-निर्मान समझकर चलें और निर्मल वाणी हो तो रोब समाप्त हो जायेगा।
- बहुतकाल की तपस्या हो तो रोब खत्म होगा।
- मालिक सो बालकपन की स्मृति से जोश रोब से मुक्ति मिलेगी।
- सहनशीलता की शक्ति हो।
- यह प्रभु परिवार है, यह सब परमात्मा की रचना है, इस स्मृति से रोब-जोश से मुक्त हो सकते हैं।
- सबको रिस्पेक्ट देते हुए हर एक की बातों को स्वीकार करके चलें तो जोश-रोब से मुक्त हो जायेंगे।
- मैं ही जानकार हूँ, मैं ही इस कार्य के अर्थ सही हूँ, अगर ये भाव रहेगा तो जोश और रोब आयेगा। यदि निमित्त भाव है तो जोश खत्म होगा।
- अपने आदि-अनादि काल के संस्कारों को इमर्ज करें तो जोश-रोब खत्म होगा, अंतर्मुखता की शक्ति से जोश रोब खत्म होगा।
- तीनों कालों को सोच समझकर कार्य करेंगे, तो जोश खत्म होगा।